श्री पार्श्वनाथ भगवान वही (श्री सम्मेदशिखर तीर्थ, वही)

मंदसौर–नीमच हाइवे रोड से 2 किलोमीटर अन्दर वह्ही गांव में 1500 वर्ष लगभग प्राचीन विश्व में अद्वितीय, सिंह के आसन पर विराजित, बालू रेत से निर्मित श्यामरंगी श्री वह्ही पार्श्वनाथ भगवान के नाम से प्रसिद्ध एक वह्ही तीर्थ है । इस प्राचीन तीर्थ की महिमा विश्व में प्रसिद्ध हो एवं दिन–दुनी रात चौगुनी उन्नत्ति हो। इस शुभ उद्देश्य को लेकर वह्ही तीर्थोद्धारक, मालवादिवाकर महामहोपाध्याय श्री यतिन्द्रविजयजी म.सा. (डहेलावाला) ने प.पू. तपस्विनी साध्वीजी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. शासनदीपिका साध्वीजी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा., मेवाड़ मालवज्योति विदुषी साध्वीजी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म.सा. के संयम पर्याय के 50 वर्ष (स्वर्ण जयन्ती) के उपलक्ष्य में श्री विमल सुदर्शन चन्द्र परमार्थिक जैन ट्रस्ट उदयपुर को श्री सम्मेदशिखर तीर्थ का निर्माण करवाने की प्रेरणा दी। जहाँ आज जमीन से 70 फीट ऊँचा शिखरबंद विशाल जलमंदिर, अधिष्ठायक मंदिर, गुरूमंदिर, समाधिमंदिर, 72 जिनालय, 26 टुंकमंदिर एवं जलमंदिर से युक्त गिरिराज बरबस ही मन को लुभाता है।

नीचे जलमंदिर में मूलनायक श्री सुदर्शना पार्श्वनाथ भगवान की 41'' ऊँची प्रतिमा दूध जैसी सफेद, दोहरे फनवाली स्कन्ध पर दो नाग से अलंकृत एवं अति रमणीय तन–मन को आल्हादित करने वाली है। मूर्ति इतनी आकर्षक एवं भव्य है कि एक बार आने वाले व्यक्ति का मन बार–बार यहाँ आने के लिए कहेगा।

हाइवे रोड पर संगमरमर का भव्य कलात्मक प्रवेश द्वार है। हाइवे रोड से मंदिर तक पक्की सड़क है। धर्मशाला, भोजनशाला आदि की सभी सुविधायुक्त इस तीर्थ के दर्शनार्थ अवश्य पधारिये। महामहोपाध्याय श्री यतीन्द्रविजयजी म. सा. के स्वर्गवास के पश्चात् इस तीर्थ का निर्माण कार्य मेवाड़ मालवज्योति साध्वीजी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म.सा. के मार्गदर्शन में चल रहा है। इस छोटे सम्मेदशिखर तीर्थ के दर्शन, वंदन व पूजन कर जीवन को धन्य बनाइये, यही शुभकामना।

वि.सा. श्री चन्द्रकलाश्रीजी म. सा. की शिष्या

जैन श्वेताम्बर तीर्थ - चीताखेडा (सुरेन्द्रनगर) मध्यप्रदेश

यह तीर्थ मेवाड़–मालवा की सीमा पर नीमच से 20 किलोमीटर दूर नगर के मध्य में स्थित है।

तीर्थ – श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर 100 वर्ष प्राचीन है जिसका जीर्णोद्धार व प्रतिष्ठा कार्य आचार्य श्री जयदेवसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य महोपाध्याय श्री यतिन्द्रविजयजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुआ।

श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा स्थापित है। यह मंदिर 130 वर्ष प्राचीन छोटे आकार का था जिसका जीर्णोद्धार कराकर विशालता प्रदान की। उसकी प्रतिष्ठा कराने का ध्येय महोपाध्याय श्री यतिन्द्रविजयजी म.सा. का रहा, लेकिन विधि को स्वीकार नहीं था और उनका देवलोकगमन हो गया। इसके पूर्व उन्होंने उनके गुरू श्री सुरेन्द्रसुरीश्वरजी की गुरूमूर्ति की स्थापना कराई जिसके फलस्वरूप चीताखेडा का नाम सुरेन्द्रनगर पड़ा।

महोपाध्याय की इच्छा को साकार करने में साध्वी सुदर्शनाश्रीजी की शिष्या विदुषी साध्वी श्री चन्द्रकला श्री की शिष्या श्री सुमलयाश्रीजी के सदुपदेश से श्रीसंघ ने विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से जीर्णोद्धार करा विशाल शिखरबंद मंदिर तैयार हुआ। इसकी प्रतिष्ठा गच्छाधिपति आचार्य श्री नवरत्नसागरसूरीश्वर के शिष्य 2900 आयंबिल के तपस्वी मुनि वैराग्य रत्नसागरजी म.सा., श्री मोक्षरत्नसागरजी म.सा., विदुषी साध्वी श्री चन्द्रकलाश्रीजी व इनकी शिष्या साध्वी श्री सुमलयाश्रीजी की निश्रा में संवत् 2060 ज्येष्ठ शुक्ला 6 शुक्रवार दिनांक 06.06.2003 को सम्पन्न हुई। यहाँ पर नूतन उपाश्रय, दादावाडी आदि भी निर्मित हुआ है।

सुमलया श्री का धर्मलाभ

साध्वी सुमलया श्री जी

प्रकाशन के आर्थिक सहयोगी संस्थाएं

प्रकाशक की ओर से हार्दिक आभार

परम् पूज्य वैराग्य देशनादक्ष विजय हेमचन्द्र सूरीश्वर जी के शिष्य रत्न परम् पूज्य पन्यास प्रवर श्री कल्याण बोधि विजय जी महाराज के सदुपदेश से श्री जिन शासन आराधना ट्रस्ट मुम्बई। 50,000/–

परम् पूज्य वैराग्य देशनादक्ष विजय हेमचन्द्र सूरीश्वर जी के शिष्य रत्न परम् पूज्य पन्यास प्रवर श्री अपराजित विजय जी महाराज सा. के सदुपदेश से कल्याणजी सौभाग्यचन्द जैन पेढी, पिण्डवाड़ा, राजस्थान 25,000/–

(2) परम् पूज्य वैराग्य देशनादक्ष विजय हेमचन्द्र सूरीश्वर जी के शिष्य रत्न परम् पूज्य पन्यास प्रवर श्री अपराजित विजय जी महाराज सा. के सदुपदेश से श्री जैन ऊँझा महाजन, ऊँझा 21,000/–

परम् पूज्य मेवाड़ देशोद्धारक विजय जितेन्द्र सूरीश्वर के शिष्य रत्न परम् पूज्य पन्यास प्रवर श्री पद्म भुषण विजय व श्री निपुण रत्न विजय जी महाराज के सदुपदेश श्रीमती शोभा बहन ललित भाई शाह नि. पिण्डवाड़ा, हाल सूरत (आश्वासन राशि) 21,000/–

श्रीमती कमला देवी पत्नी लक्ष्मीलाल जी सिंघवी निवासी नांदेशमा हाल सूरत (नांदेशमा प्रतिष्ठा के अवसर पर पुस्तक की पाडुलिपि की बोली में) (आश्वासन राशि) 11,000/–

श्री वर्धमान जैन श्रावक समिति हिरण मगरी से. 3 व 4 पद्म भुषण विजय म. के चातुर्मास में ज्ञानद्रव्य राशि हस्ते श्री भूपालसिंह दलाल (आश्वासन राशि) 11,000/–

परम पूज्य मेवाड़ रत्न आचार्य श्री पद्म प्रभ सूरीश्वर जी महाराज सा. के सदुपदेश श्री धर्म मंगल जैन विद्यापीठ सम्मेदशिखर (झारखण्ड) 11,000/–

परम पूज्य विदुषी साध्वी श्री चन्द्रकला श्री जी के सदुपदेश से श्री सुरेन्द्र सूरीश्वर जी स्मारक आराधना भवन की आराधक बहनों का ज्ञान ट्रस्ट मन्दसौर (म.प्र.) 11,000/–

श्री जैन श्वेताम्बर श्री वासुपूज्य महाराज का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर 11,000/–

श्री आचल गच्छाधिपति श्री गुणसागर सूरीश्वर जी महाराज के शिष्य रत्न प.पू. मुनिवर श्री सर्वोदय सागर जी महाराज सा. के सदुपदेश से श्री चारित्र रत्न फाउण्डेशन चेरिटेबल ट्रस्ट, अमलनर (महाराष्ट्र) 11,000/–

श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, हाथीपोल उदयपुर 10,000/–

परम् पूज्य विदुषी साध्वी श्री चन्द्रकला श्री जी की शिष्या प. पूज्य साध्वी श्री सुमलया श्री जी के सदुपदेश से श्री जैन श्वेताम्बर संघ चीताखेड़ा (सुरेन्द्र नगर) (म.प्र.) 5,000/–

श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपाश्रय, उदयपुर 5,000/–

श्री सर कीका भाई प्रेमचन्द ट्रस्ट, ऋषभदेव 5,000/–

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, कूरज (राजसमन्द) 5,000/–

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, हिरण मगरी, से.–11 उदयपुर 5,000/–

(।। श्री जित–हीर–बुद्धि–तिलक–शान्ति–रत्नशेखर सूरिभ्य नमः ।।)

परम पूज्य आचार्य श्री रत्नाकर सूरीश्वरी जी म.सा.

जीवन - परिचय

जन्म : वि.सं. 2015 श्रावण सुद पूर्णिमा 30.07.1958 (रक्षाबंधन) मालवाड़ा

व्यावहारिक अभ्यास : दसवी पास

संयमभावना : देवलवाड़ा के अन्तर्गत आचार्य देवश्री जितेन्द्र सूरीश्वरी जी म.सा एवं आचार्य देवश्री गुणरत्न सूरीश्वर म.सा. की निश्रा में प्रवचन (शिविर) के माध्यम से।

दीक्षा की तालीम हेतु : प.पू. आचार्य देवश्री रत्नशेखर सूरीश्वर जी म.सा. की निश्रा में तीन साल तक धार्मिक अभ्यास सांसारिक परिवार नाम : खुशाल भाई

पिता : उत्तमचन्द जी, माता : रंगुबहन, गौत्र : गजाणी

भाई : पोपटलाल, मणिलाल, धनपाल (धनपाल) (मु. रत्नत्रयविजय)

काका : राजमल भाई काकी : दीवालीबहन

भुआ : हस्तुबहन, धनीबहन, धुडीबहन, दीवालीबहन

दीक्षा : वि.सं. 2033 वैशाख वद–6 दिनांक 6.5.77 मालवाडा

दीक्षा का नाम : मुनि श्री रत्नेन्द्रविजय जी म.सा.

दादा गुरुदेव : पंन्यास प्रवरश्री तिलकविजय जी गणि

गुरूदेव : प.पू. आचार्य देव श्री रत्नशेखर सूरीश्वर म.सा.

गुरुदेव स्वर्गवास : वि.सं. 2038 जेठवद – 6 पालनपुर गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद कलिकुण्ड तीर्थोद्धारक **आचार्य देव श्री राजेन्द्र सूरीश्वर जी** की निश्रामें शास्त्राभ्यास

गणि एवं पंन्यासपद : वि.सं. 2049 फागणसुद – 4 कलिकुण्ड तीर्थ – धोलका

आचार्यपद : वि.सं. 2052 महासुद – 13 कलिकुण्ड तीर्थ धोलका (आचार्यदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. की पावन निश्रामें)

शिष्य परिवार : मुनि श्री रत्नत्रय विजय जी, मुनिश्री रत्नज्योत विजय

प.पू. शासन प्रभावक आचार्य देव श्री रत्नाकर सूरीश्वर जी म.सा. के 51 वें साल में प्रवेश प्रसंगे

– उदयपुर मालदास स्ट्रीट आराधना भवन में चातुर्मास विराजमान मुनि श्री रत्नत्रय विजय जी एवं पंन्यास श्री रत्नज्योत विजय जी म.सा. की प्रेरणा से श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक श्री संघ उदयपुर के ज्ञान खाता में से सहयोग राशि 51,000/– दिये।

आर्थिक सहयोगी सदस्यों को प्रकाशक की ओर से हार्दिक आभार

श्रीमती नारंगी देवी पत्नी किरण राज गुंगलिया
के वर्षीतप के पारणे निमित्त पुत्र
श्री चेतन कुमार, श्री केतन कुमार एवं श्री राहुल कुमार
नि. इच्छलकरण जी एवं सूरत (5,000/–)

श्रीमती सुशीला पत्नी मोहनलाल बोल्या (लेखक)
(पुत्री श्री लाल चन्द सिंघवी)
37, शांति निकेतन कॉलोनी, उदयपुर (5000/–)

श्रीमती नीलम पत्नी अशोक भादविया
(पुत्री मोहनलाल बोल्या)
अल्का होटल के पास, उदयपुर (5000/–)

श्रीमती नीता पत्नी श्री सुरेन्द्र धुप्या
(पुत्री मोहनलाल बोल्या)
8, प्रतापमार्ग, स्वरूपसागर, उदयपुर (5,000/–)

श्रीमती निशी पत्नी श्री अशोक पुत्र श्री शेरसिंह जी खमेसरा
(पुत्री मोहनलाल बोल्या)
मलाड (वेस्ट) मुम्बई (10,000/–)

श्रीमती नीरू पत्नी श्री राजेन्द्र लोढ़ा
(पुत्री मोहनलाल बोल्या)
65, मालदास स्ट्रीट, उदयपुर (5000/–)

श्रीमती निर्मला पत्नी श्री निर्मल जी लोढ़ा
निवासी– शक्तिनगर,
चेम्बूर, मुम्बई (5000/–)

श्रीमती नीना पत्नी स्व. श्री किशोर पगारिया
(पुत्री मोहनलाल बोल्या)
बापना स्ट्रीट, उदयपुर (5000/–)

श्रीमती आभा दलाल पत्नी डॉ. बसन्तीलाल जी दलाल
(**परिश्रम सहयोगी**) पुत्र श्री किशनलाल जी दलाल
16–सी, मधुवन, उदयपुर (5000/–)

श्रीमती शान्तादेवी पत्नी श्री खड्गसिंह जी हिरण
पंचवटी, उदयपुर (5000/–)

श्रीमती कमला देवी पत्नी श्री भेरूलाल जी चौधरी (मातुश्री सुशील चौधरी)
नवरत्न काम्पलेक्स, उदयपुर (5000/–)

श्रीमती धाकु बहन पत्नी श्री चुन्नीलाल जी रांका
दादाई वाले (माता–पिता श्री महावीर जी रांका,
फतेहपुरा, उदयपुर (11,000/–)

श्री चांदसिंह जी पुत्र स्व. डालचन्द जी मुर्डिया
66–26, रामसिंह जी की बाड़ी, से. –11, उदयपुर (5000/–)

प्राग्वाट सेठ श्री मदनसिंह जी कोठारी
विरदी चन्द नथमल कोठारी,
निम्न तीर्थों के विकास के प्रेरणादायिक 1. ऋषभदेव तीर्थ केशरियाजी
2. श्री पार्श्वनाथ तीर्थ, करड़ा 3. श्री पद्मनाभ स्वामी तीर्थ, उदयपुर
सौजन्य : श्री उगरसिंह गोरवाड़ा, एडवोकट,
4–डी, न्यू फतेहपुरा, उदयपुर 5,000/–

श्री धनरूपमल पुत्र श्री समर्थमल जी मेहता
निवासी 648, हि.म. सेक्टर–11, उदयपुर (आश्वासन राशि) 5000/–

श्री भूपालसिंह पुत्र स्वी. श्री जौरावरसिंह जी दलाल
दलाल पेट्रोल पम्प, उदयपुर (5000/–)

श्रीमती नीना पत्नी श्री कीर्ति कुमार जैन
निवासी – उज्जैन (5000/–)

श्रीमती चन्द्रकला पत्नी श्री हिम्मतसिंह दलाल
अशोक नगर, उदयपुर (2000/–)

परिश्रम सहयोगी

श्री छगनलाल पुत्र स्व. मोतीलाल जी नलवाया
1345, प्रभात नगर, हिरण मगरी सेक्टर–5,
उदयपुर

श्री मुरलीधर पुत्र श्री मांगीलाल जी सोनी
सम्पादक ''अपनी पत्रिका'', देलवाड़ा,
नाथद्वारा (राजसमन्द)

श्री बसन्त कुमार मोगरा
(आई.आर.एस. रिटायर्ड)
72, सुभाष मार्ग, उदयपुर

पूर्व प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा

उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं **'मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ'** नामक प्रकाशित पुस्तक व अन्य के बारे में विभिन्न आचार्य, मुनि भगवंतों, धार्मिक के विचार (लेखक के नाम सम्बोधित)

उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ के प्रकाशन से आपने जैन शासन की अमूल्य सेवा कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है, उसके लिए साधुवाद।

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ– मेवानगर (राजस्थान)

आपके सराहनीय प्रयास की अनुमोदना–सह साधुवाद

मुनि श्री जगच्चन्द्र विजय, नानपुरा, सूरत, दि. 05.10.05

पुस्तक का अवलोकन कर हृदय प्रफूल्लित हुआ। इस वृद्धावस्था में संस्कृत और प्राकृत भाषा के अध्येता न होने पर भी जिस कठोर परिश्रम के साथ प्रत्येक मंदिर में जा–जाकर समय का भोग देकर आपने जो जनता के लिए एक आदर्श उपस्थित किया है, वह वस्तुतः अभिनन्दनीय और अनुकरणीय है। इसके लिए मेरी ओर से शतशः बधाई स्वीकार करें। मंदिरों का विधिवत परिचय देते हुए प्रत्येक मूर्ति के स्थल और लेखों का विवेचन प्रस्तुत किया है, वह भी पठनीय है।

महोपाध्याय विनयसागरजी, निदेशक, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, 1288/12.10.05

पुस्तक मिली, बड़ा अच्छा और अनुमोदनीय कार्य किया है। दर्शनीय जिनालयों की माहिती एक ही पुस्तक में पाया जाना बहुत ही कठिन है। आपकी इस पुस्तक ने वह कार्य सरल किया है।

गच्छाधिपति आचार्य श्री विजय अभयदेवसूरीश्वर जी, आसोज सूदि, 12 नवसारी

उदयपुर के 58 जिनालयादि की प्रत्येक प्रतिमाएं इत्यादि लेखों का संग्रह के लिए आपने काफी परिश्रम किया है, इसकी खूब अनुमोदना।

गणिवर श्री महोदयसागर जी म.सा., नागलपुर, (मांडवी) कच्छ

बहुत सुन्दर प्रयास है। जैन इतिहास की कडी इससे मिलेगी। खोज करने वाले लोगों को कार्य में सुगमता रहेगी।

आचार्य श्री पदम् सागर सूरिश्वर जी म.सा., गांधीनगर–17.10.05

उदयपुर व मेवाड़ प्रदेश का परिचय पुस्तिका से उपलब्ध हुआ, वह प्रशंसनीय है, आपकी मेहनत प्रशष्य है।

मुनि रम्यदर्शन विजय जी म.सा., पालीताणा दि. 24.10.05

आपने जन्मभूमि का ऋण उतारने का प्रयास किया है। उदयपुर शहर एवं उदयपुर की चारित्राओं की सूची में ध र्मनगरी के नाम से पहचान कराने का पुरुषार्थ किया है। इतनी गहराई में उतरकर आपने महान् सराहनीय काम किया है जो प्रशंसनीय है।

विदुषी साध्वी श्री चन्द्रकला श्री जी म.सा. दि. 12.11.05

आपने अत्यन्त परिश्रम से बनाई हुई इस अति सुन्दर पुस्तक का अवलोकन करते हुए तीर्थ यात्रा का अनुभव हुआ। पुस्तक का कागज, प्रिन्टिंग आदि कार्य सुन्दर हुआ है। यह पुस्तक दस्तावेज का कार्य करेगी।

आचार्य आनन्दघन सूरीश्वर म.सा. एवं आचार्य विजयप्रदीपचन्द्रसूरि जी म.सा.

आपकी द्वारा लिखित मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ देलवाड़ा के जैन मंदिर पुस्तक प्राप्त हुई। पुस्तक का अवलोकन हृदयमय प्रफुल्लित हुआ। इस अवस्था में भी आपने अत्यन्त कठिन परिश्रम पूर्वक इस पुस्तक का लेखन किया है, इसके लिए साधुवाद के पात्र हैं।

देलवाड़ा जैन प्राचीन तीर्थ के संबंध में जनता अनभिज्ञ ही है। प्राचीन मूर्तियों के लेखों के द्वारा इसका प्रकाशन अत्यन्त सुन्दर व अनुकरणीय हुआ।

वाचस्पति महोपाध्याय विजयसागर जी, निदेशक–प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

धर्मकथा, उदयपुर की ओर आते वक्त देलवाड़ा के प्राचीनतम जिलालयों में जिनेश्वर परमात्मा के दर्शन का सौभाग्य मिला साथ ही वहाँ पर ही **''मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ देलवाड़ा जैन मंदिर''** नामक आपके द्वारा लिखित पुस्तक भी सम्पूर्ण पढ़ी।

आपका प्रयास प्रशंसनीय है। काफी श्रम साध्य पुस्तक आपने तैयार की है। देलवाड़ा के इन मंदिरों के प्राचीनता के विषय में मैंने बचपन से ही सुना था और तभी से दर्शन उत्कंठा थी जो अब परिपूर्ण हुई।

आपके अपनी इस पुस्तक में प्रतिमाओं की प्राचीनता का तो स्पष्ट उल्लेख किया है किन्तु अब यदि इसकी अगली अपवृत्ति निकले तो इसमें मन्दिरों की प्राचीनता परिलक्षित हो, ऐसा मेरा खास सुझाव है। चूंकि ये मंदिर आबू के देलवाड़ा मंदिरों से भी प्राचीन है। वस्तुपाल तेजपाल और विमलमंत्रीश्वर ने इन्हीं मंदिरों की प्रतिकृति के रूप में आबू पर्वत पर मंदिर निर्माण करवाये और इसीलिये वे देलवाड़ा के नाम से जग विख्यात बने है, ये इस पुस्तक से पाठकों को सुझाव हो।

मुक्ति सागर

हिंसा को कम से कम और अहिंसा को अधिकतम अपनाते हुए जीना सर्वश्रेष्ठ जीवनशैली है। भगवान महावीर ने विचारों की सूक्ष्म हिंसा को भी परिभाषित कर सबके हित को संदेश दिया है। उन्होंने अहिंसा को 'प्राण' की संज्ञा दी है। अपनी सुरक्षा और सभी के प्रति सर्वाधिक न्याय अहिंसक जीवन-शैली से ही संभव है। अहिंसा धैर्य से काम लेना सिखाती है। अहिंसक व्यक्ति अपने तन-मन-धन और वाणी की शक्ति भी किसी के अहित या हिंसा के लिये खर्च नहीं करता। अहिंसा शुद्ध व सात्विक भावों की गंगोत्री है। हिंसा का आखरी मुकाम तो सर्वनाम होगा। उसमें किसी का हित नहीं है।

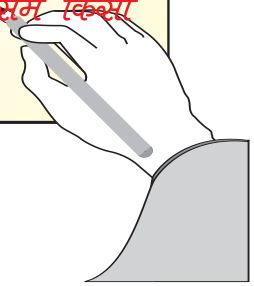

लेखक के विचार

पूर्व मेवाड़ राज्य राजपुताना के दक्षिण में 23.49 से 25.28 उत्तरी अक्षांश से 73.1 से 75.49'' पूर्वी डिग्री देशान्तर के बीच स्थित था। मेवाड़ राज्य का अपना एक इतिहास है । इतिहास लिखने में शिलालेख, पट्टे (ताम्रपत्र), लेख अभिलेख सहायक होते हैं। उनसे जिस प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है, उसी आधार पर वह (प्रकाशक/लेखक) पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है और पाठकगण भी उस पर विश्वास करते हैं, क्योंकि वे लेखक के प्रति विश्वस्त होते हैं।

प्रथम पुस्तक (उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन तीर्थ) व दूसरी मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ देलवाड़ा जैन मंदिर नामक पुस्तक प्रकाशित होने के बाद मेवाड़ के मंदिरों के बारे में भी जानकारी लेकर व लेख–अभिलेखों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का मैनें प्रयास किया। मेवाड राज्य की सीमा बहुत लम्बी है, उसको एक साथ प्रस्तुत न कर मेवाड का कुछ भाग (उदयपुर, राजसमंद जिलों के व अन्य जिलों के मुख्य मंदिरों का वर्णन प्रस्तुत करने का गौरव मुझे मिला है।

इतिहास के क्षेत्र में साहित्यज्ञान को बहुत सम्मान से देखा जाता है, यही एक प्रामाणिक साहित्य होता है जो भूतकाल की सभी घटनाओं को प्रस्तुत करता है। विशेष तौर पर धर्म के क्षेत्र में महापुरूषों, पुण्यात्माओं, जिन प्रतिमाओं, जिन मंदिर आदि का विस्तृत परिचय हमको इतिहास ही कराता है लेकिन खेद है कि मेवाड़ के जैन मंदिरों के बारे में किसी महापुरूष ने विशेष कार्य नहीं किया, यदि किया भी है तो अपर्याप्त है।

शिलालेखों में कालान्तर में परिवर्तन या संशोधन की संभावना नहीं रहती है। प्रतिमा/दीवारों/स्तम्भों पर उत्कीर्ण तथ्यों का लेखक/इतिहासकार अधिक महत्व देते हैं, क्योंकि इनकी विश्वसनीयता होती है। शिलालेखों का महत्व जानते हुए भी जैन सम्प्रदाय के साधु–संतों ने मंदिरों पर जो कार्य किया है, वह अपर्याप्त है। लोगों ने प्राचीन लेखों को जीणोद्धार के समय उखाड कर फैंक दिये, घिसाई के समय मिटा दिये, दीवारों में चुनवा दिये या उन पर सफेदी करवा दी। अभी–अभी जीर्णोद्धार (मरम्मत) के नाम से देलवाड़ा मंदिर के ढांचें को ही नष्ट कर दिया, यह विडम्बना ही है कि एक ओर पुरातत्व विभाग व राज्य सरकार प्राचीन संस्कृति को सुरक्षित करने का प्रयास कर रही है। वहीं दूसरी ओर प्राचीनता को नष्ट किया जा रहा है। यहाँ पर श्री अजितनाथ भगवान के समय में **चक्रवर्ती राजा सगर** हुये हैं। उनके पुत्र अष्टापद तीर्थ की यात्रा करने गये, वहाँ पर तीर्थ की भव्यता, कला व रत्नमय प्रतिमा को देखा और सोचा कि यहाँ नवीन तीर्थ स्थापित किया जाये तो ज्येष्ठ पुत्र ने विचार कर आदेशात्मक स्वर में कहा कि भविष्य में लोग धन की लोलुपता के कारण प्रतिमा व कला को नष्ट करेंगे। **अतः नवीन तीर्थ का निर्माण छोड़ इसी तीर्थ का संरक्षण किया जाये** और उन्होनें उस तीर्थ के चारों ओर बड़ी खाई बनाकर पानी से भरा जिससे तीर्थ के दर्शन हो सके, व नुकसान नहीं हो सके। लेकिन यह अनुभव हुआ कि गच्छीय ममत्व/प्रतिशोध की भावना से प्राचीन लेखों को नष्ट कर दिया गया, भवनों को तोड़–फोड़ कर मंदिरों

की प्राचीनता को नष्ट कर दिया गया जो धर्म व समाज के लिए उचित कार्य नहीं है। यहाँ यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा कि आचार्य, साधु भगवंतों को नव मंदिर निर्माण की ओर अधिक झुकाव न रखते हुए निर्मित्त मंदिरों की प्राचीनता को बनाये रखते हुए जीर्णोद्धार कराना चाहिये। इन सभी को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक मंदिर में उपलब्ध लेखों को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है जिससे इसका एक इतिहास बन सके और जो अपरिपूर्ण है, उसके लिए खोज करने का मार्ग सुलभ हो सके, ऐसी मेरी मान्यता है। यहाँ यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा कि इतिहास को बदला जा रहा है। इसके दोषी कौन?

अब समय आ गया है कि नवीन मंदिर निर्माण करने के साथ–साथ दूसरों की भलाई के लिए जीना सीखना चाहिए, दूसरों की पीड़ा के निवारण, उनके विकास की ओर जैसे जैन स्कूल, कॉलेज, कॉटेज, औषधालय निर्माण करने पर विचार करना होगा। इसके साथ–साथ यह भी आवश्यक है कि गच्छवाद को भूलकर एक मंच पर आना होगा और समाज की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समीक्षा करनी होगी कि श्वेताम्बर समाज के विभिन्न सम्प्रदायों में मूर्तिपूजक समाज की क्या स्थिति है। मेवाड़ राज्य में प्रथम, द्वितीय व तृतीय प्रकार के ठिकाने है उन स्थानों पर घनी जैन बस्ती रहती थी ऐसा प्रतीत होता है इन्ही कुछ ग्रामों में प्राचीन विशाल जैन मंदिर विद्यमान हैं।

फोटो उपलब्ध कराने में विभिन्न मंदिरों की कुछ संस्थाओं, पदाधिकारियों ने सहयोग दिया, जिनका आभारी हूँ। लेखन शुद्धि संशोधन कार्य में श्रीमती आभाजी दलाल, डॉ. श्री बसन्तीलालजी दलाल व श्री बी.के. मोगरा ने सहयोग दिया उनका भी हृदय से आभारी हूँ।

मंदिरों के लेखों में पढ़ने व अन्य कार्य में श्रीमती नीता धुप्या, श्री छगनलालजी नलवाया, श्री मुरलीधर सोनी व मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य हेतु श्री राजेन्द्रजी लोढा, श्री निर्मलजी लोढा, श्रीमती देविका सिघंवी, श्रीमती जतनबाईजी सिंघवी, श्रीमती लहरबाईजी बापना, श्री अनीषजी कोठारी, श्री प्रतापजी भण्डारी, श्री विजयराजजी मेहता, श्री दौलतसिंह जी मेहता, श्रीमती उमरावबाईजी मेहता, श्री दलपतसिंहजी दुग्गड़ व श्री किरणमल जी सावनसुखा श्री महेन्द्र पुत्र शेरसिंह जी खमेसरा मुम्बई श्री जोधराज जी कोठारी, श्री दयालसिंह जी नाहर, श्री प्रताप चेलावत व अन्य सदस्यों ने सहयोग दिया, उसके लिए आभारी हूँ। लेख देखने व लिखने में सतर्कता रखी है, फिर भी कोई त्रुटि हो तो सभी से क्षमा चाहता हूँ तथा संशोधन करने हेतु सुझाव देने का अनुरोध है।

श्रद्धेय प. पूज्य पं. प्रवर श्री कल्याण बोधि जी, श्री अपराजित विजय जी, निपूर्णरत्न विजयजी, रत्नत्रजी, एवं पं. प्र. रत्न ज्योति महाराज सा. के आशीर्वाद से यह पुस्तक हाथों में है।

अतः यह कहा जा सकता है कि– व्यक्ति की पहचान उसके देश से, होती है देश की पहचान उसकी संस्कृति से और संस्कृति की उसके इतिहास, साहित्य, कला, धर्म, लेख, शिलालेख से। यदि हमें अपनी पहचान बनाएं रखनी है तो हमारे इतिहास, साहित्य आदि का संरक्षण करना होगा।

आपका शुभेच्छु

(मोहनलाल बोल्या)

पंच परमेष्ठी मंत्र

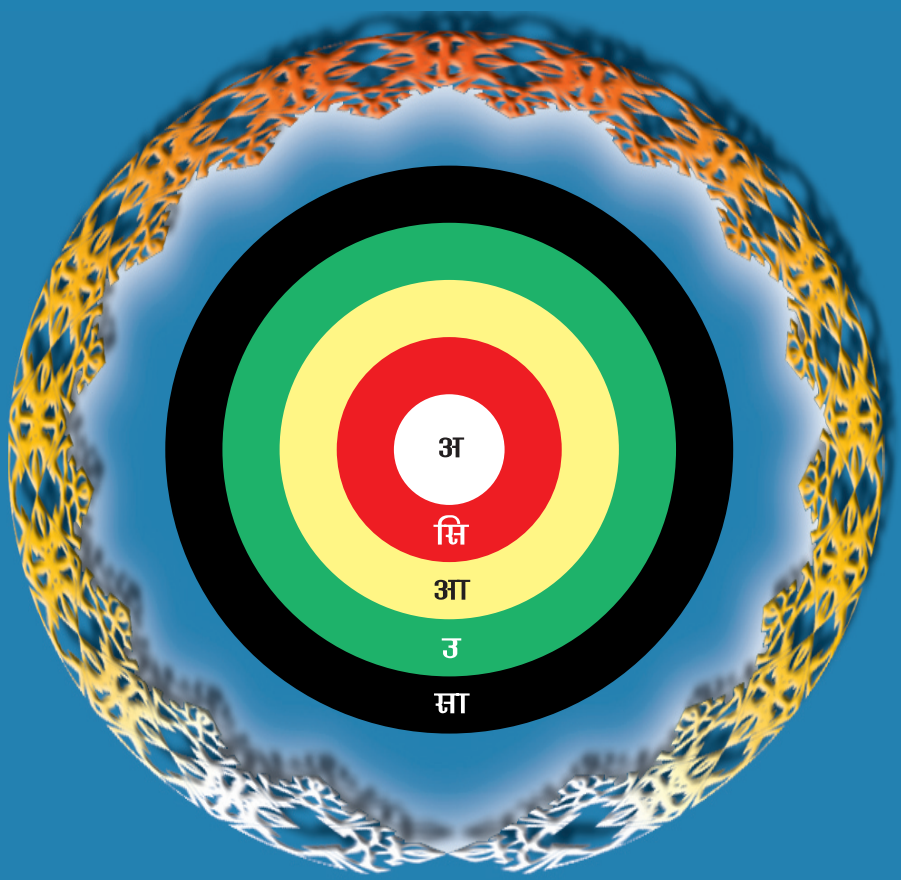

परमेष्ठी मंत्र छन्द

नित्य स्मरणावली

ऊँ परमेष्ठी नमस्कारं, सारं नवपदात्मकम्। आत्मरक्षाकरं वज्र–पंजराभं स्मराम्यहम्।।1।।

ऊँ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम्। ऊँ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम्।।2।।

ऊँ नमो आयरियाणं, अङ्गरक्षाऽतिशायिनी। ऊँ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम्।।3।।

ऊँ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे। एसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयीतले।।4।।

सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः। मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरङ्गारखातिका।।5।।

स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं। वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं दे हरक्षणे।।6।।

महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी। परमेष्ठीपदोद्भू, कथिता पूर्वसूरिभिः।।7।।

यश्चैनं कुरुते रक्षां, परमेष्ठीपदैः सदा। तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्र्वापि कदाचन।।8।।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
	मेवाड़ के समीप प्राचीन उल्लेखनीय तीर्थों का विवरण	
	आचार्य देवों का जीवन–परिचय	
	साधु भगवन्तों का आशीर्वाद एवं संदेश	
	तीर्थ स्थलों के दशनार्थ अनुरोध संदेश	
	आर्थिक सहयोगी संस्थाएं एवं सदस्यों का विवरण	
	पूर्व प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा	
	लेखक के विचार	
	पंच परमेष्ठी मंत्र	
	उदयपुर जिला मार्गदर्शक दिशा (मानचित्र)	
	पद्मावती मां को वंदना	
1.	मेवाड़ और जैन धर्म	37
2.	मूर्ति पूजा का प्रचलन–विरोध और वर्तमान में आवश्यकता व महत्त्व	40
3.	श्री ऋषभदेव (केसरिया जी तीर्थ), श्री आदिनाथ का मंदिर, ऋषभदेव	55
4.	श्री जैन दादावाड़ी (श्री केसरिया जी तीर्थ) ऋषभदेव	66
5.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, ऋषभदेव	67
6.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, केसरिया जी	69
7.	श्री ऋषभदेव चरण–पादुका मंदिर, ऋषभदेव	73
8.	श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, खेरवाड़ा	74
9.	श्री जैन मंदिर, जावर (खण्डहर)	76
10.	श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, सलूम्बर	80
11.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, भबराना	86
12.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, धरियावाद	89
13.	श्री केसरियानाथ (ऋषभदेव जी) का मंदिर, लूणदा	93
14.	श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, राजपुरा–कानोड़	94
15.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कानोड़	96
16.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, बाबेलों का मोहल्ला कानोड़	98
17.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भीण्डर	99
18.	श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर खैरोदा	103
19.	श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, कुंथवास	106
20.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, इण्टाली	108
21.	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, मेणार	111
22.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर रूण्डेड़ा	114
23.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, भटेवर	116
24.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, वल्लभनगर	118
25.	श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, चंगेड़ी	120
26.	श्री शंखेश्वर पार्श्वननाथ भगवान का मंदिर, फतहनगर	122
27.	श्री पद्मप्रभ भगवान का मंदिर सनवाड़	124
28.	नमिनाथ भगवान का मंदिर, खरताणा	127
29.	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, मावली	129
30.	श्री चंन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, मावली	131

31.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, थामला	133
32.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, पलाणा	135
33.	श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर, सिन्दु	141
34.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, घासा	143
35.	श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, खेमली	145
36.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, गुड़ली	148
37.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, डबोक	150
38.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, करणपुर	153
39.	श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मोड़ी	155
40.	श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर, बाठेड़ा कला (खण्डहर)	156
41.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर, दरोली (अस्तित्वहीन)	156
42.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बम्बोरा	157
43.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, देबारी	159
44.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, ढींकली	161
45.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, मटूण	163
46.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, लकड़वास	165
47.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, सीसारमा	167
48.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, नाई	169
49.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, माणस	171
50.	श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, बाघपुरा	173
51.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, झाड़ोल	175
52.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कोलियारी	177
53.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर खाखड़ (खण्डहर)	178
54.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गोराणा	179
55.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर, मजावद (खण्डहर)	179
56.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, ओगणा	180
57.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर मादड़ा (खण्डहर)	181
58.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गोगुन्दा	182
59.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गोगुन्दा	187
60.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, गोगुन्दा	188
61.	श्री नवपल्ल पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मजावड़ी	189
62.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर, जसवंतगढ़ (खण्डहर)	191
63.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, रावलिया कलां	192
64.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, नांदेशमा	194
65.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, नांदेशमा	197
66.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, ढोल	199
67.	श्री मुनिसुव्रत एवं श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कमोल	202
68.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, पदराड़ा	205
69.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, सेमड़	207
70.	श्री कुंथुनाथ भगवान मंदिर, रावों का सायरा	209
71.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, ढीकोला	214
72.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भानपुरा	217
73.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, सायरा	219
74.	श्री वासुपुज्य भगवान का मंदिर, सायरा	221

75.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, तिरपाल	224
76.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भूताला	226
77.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, वाटी	228
78.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, कदमाल	230
79.	श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, कटार	231
80.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बरवाड़ा	233
81.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, करदा	235
82.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर, लोसिंग (खण्डहर)	236
83.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर, कड़िया (खण्डहर)	236
84.	श्री चिंतामणि आदिनाथ भगवान का मंदिर, ईसवाल	237
85.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कविता	242
86.	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, मदार	243
87.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, थूर	246
88.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, लखावली	248
89.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, नागदा (अद्भुत जी)	251
90.	संशोधन/शुद्धिकरण	258

राजसमन्द जिला

91.	राजसमन्द जिला का मानचित्र	262
92.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, राजनगर	263
93.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, राजनगर	268
94.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, राजनगर	270
95.	श्री गौतम स्वामी गुरु मंदिर, राजनगर	272
96.	श्री नेमीनाथ भगवान का मंदिर, राजनगर	273
97.	श्री सुविधिनाथ भगवान का मंदिर, राजनगर	274
98.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर केलवा	277
99.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, केलवा	279
100.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर केलवा	281
101.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, पड़ासली	283
102.	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, गोमती चौराया	285
103.	श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, साथिया	288
104.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, चारभुजा	290
105.	श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर, सेवंत्री	294
106.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, सेवंत्री	297
107.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, झीलवाड़ा	299
108.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, रिछेड़	301
109.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, रिछेड़	305
110.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, हिमाचलसूरि नगर, (चारभुजा चौराया)	307
111.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, लाम्बोड़ी	311
112.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, दीवेर	313
113.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, अजीतगढ़	315
114.	श्री केसरिया नाथ भगवान का मंदिर, भीम	316

115.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, भीम	320
116.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भीम	321
117.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, लसाणी	324
118.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, ताल	325
119.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, देवगढ़	327
120.	श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, देवगढ़	329
121.	श्री जिनदत्तसूरि दादावाड़ी पादुका मंदिर, देवगढ़	330
122.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, आमेट	331
123.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, चारभुजा रोड़ आमेट	333
124.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर, सेलागुड़ा (खण्डहर)	334
125.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, ढेलाणा	335
126.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, आगरिया	336
127.	श्री जैन श्वेताम्बर भगवान का मंदिर, शिवनाल (खण्डहर)	337
128.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, सरदारगढ़	338
129.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, बागोल	340
130.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कुंटवा	341
131.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सिसोदा	342
132.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, गुड़ला	344
133.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, गुड़ला	345
134.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, परावल	346
135.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, झालों की मदार	348
136.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, गांव गुड़ा	351
137.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर फतहपुर	354
138.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कराई	355
139.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, मचींद	357
140.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर, मचींद (खण्डहर)	360
141.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, मोलेला	361
142.	श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर, खमनोर	363
143.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, खमनोर	364
144.	श्री जैन श्वेताम्बर भगवान का मंदिर, खमनोर	365
145.	श्री मल्लिनाथ भगवान का मंदिर, खमनोर	366
146.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, खमनोर	367
147.	श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, खमनोर	368
148.	श्री जैन श्वेताम्बर दादावाड़ी, खमनोर	371
149.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, खमनोर	372
150.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, सेमल	373
151.	श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, कागमादड़ा (महावीर भगवान)	375
152.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, घोड़च (निर्माणधीन)	376
153.	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, नाथद्वारा	377
154.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, नाथद्वारा	379
155.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, सगरून	382
156.	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, सलोदा	383